इको फ्रेंडली होली

नवनीत कुमार गुप्ता

हमारे देश में प्राचीन काल से होली का रंग-बिरंगा त्यौहार मनाया जाता रहा है। इस त्योहार के साथ होलिका दहन की पौराणिक कहानी जुड़ी है। असल में होली का त्योहार प्रेम और असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है। लेकिन आजकल जिस ढंग से होली मनाई जाती है, वह खुद हमें और पर्यावरण को जाने-अनजाने नुकसान पहुंचाती है।

इस त्योहार का आज सबसे दुखदायी पक्ष रासायनिक रंगों का बढ़ता प्रयोग है। जहां पहले टेसू, गेंदे, गुलाब और कनेर आदि फूलों व हल्दी आदि से बने प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती थी वहीं अब बाज़ार रासायनिक रंगों से भरे पड़े हैं। रासायनिक रंग न केवल पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं बल्कि अनेक बीमारियों को जन्म भी देते हैं। रासायनिक रंगों में अनेक ऐसे पदार्थ होते हैं जो हमारी त्वचा के लिए हानिकारक साबित हो सकते हैं। अनेक बार तो रंग बेचने वालों को भी यह पता नहीं होता कि उनके द्वारा बेचा जा रहा रंग केवल औद्योगिक उपयोग के लिए होता है न कि होली खेलने के लिए।

काले रंग बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले लेड ऑक्साइड से गुर्दों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है, वहीं हरा रंग बनाने में उपयोग किए गए कॉपर सल्फेट से आंखों में जलन और अंधत्व का खतरा पैदा हो सकता है। एल्यूमिनियम ब्रोमाइड से तैयार सिल्वर रंग कैंसर जैसे भयानक रोग का कारण बन सकता है। लाल रंग के लिए जिस मर्करी सल्फाइट का उपयोग किया जाता है वह त्वचा रोग उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार रंगों में ऐसे अनेक रसायन उपस्थित हैं जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होते हैं। ऐसे रंगों के संपर्क में आने से न केवल त्वचा रोग फैलते हैं बल्कि चिड़चिड़ापन और मानसिक अवसाद जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं। कुछ लोगों के अनुसार गुलाल से सूखी होली खेली जा सकती है लेकिन अब गुलाल भी सुरक्षित नहीं रहा। गुलाल और रंगों में सिलिका और अनेक ऐसे रासायनिक रंग मिले होते हैं जिनके कारण त्वचा पर फुंसियां निकल आती हैं और जलन होती है। कभी-कभार रंगों के आंखों में चले जाने से आंखों को गंभीर खतरे का सामना करना पड़ता है।

होली खेलने का सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि हम अपने घर में ही फूलों और प्राकृतिक पदार्थों से बनाए गए रंगों यानी इको फ्रेंडली रंगों का उपयोग करें। ऐसे रंग हमारे स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह भी नहीं होते और वे हमें प्रकृति से भी जोड़े रखते हैं। इसके लिए हम विभिन्न फूलों का उपयोग कर प्राकृतिक रंग बना सकते हैं। जैसे पीला रंग बनाने के लिए हम हल्दी और टेसू के फूल का उपयोग कर सकते हैं। अनार के छिलकों को रात भर भिगोकर अच्छा रंग बना सकते हैं। मेहंदी से भी अच्छा रंग बनाया जा सकता है। चुकंदर को काटकर उबाल लिया जाए तो बहुत अच्छा रंग बनता है। इसके अलावा आंवला, गाजर और पालक के पत्तों से भी कई रंग बना सकते हैं। इस प्रकार घर में बने रंग न तो हमारी जेब पर भारी पड़ेंगे और न ही हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होंगे।

होली के त्योहार के दौरान होती पानी की बर्बादी भी चिंता का विषय है। हम जानते ही हैं कि हमारे देश के अनेक हिस्सों में जल संकट के कारण काफी समस्याएं उत्पन्न होती है। ऐसे में होली के दौरान पानी की फिज़ूलखर्ची करना समझदारी का काम नहीं है। इसलिए हमें होली खेलते हुए हमेशा पानी के महत्व को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि पानी की एक-एक बूंद कीमती है। हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में आज भी लाखों लोग, विशेषकर महिलाएं, पानी के लिए कई-कई कि.मी. भटकते हैं। इस दौरान एक बात और ध्यान रखनी चाहिए कि रंगों के अंधाधुंध प्रयोग से जल स्रोत भी दूषित होते हैं। जल स्रोत के प्रदूषित होने का असर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे स्वास्थ्य पर ज़रूर पड़ता है। इसलिए हमें होली के दौरान

यह ध्यान रखना चाहिए कि हम केवल ऐसे रंगों का उपयोग करें जो पानी के प्रदूषण का कारण भी न बनें।

इसके अलावा होलिका दहन के दौरान पूरे देश में जलाई जाने वाली लाखों टन लकड़ियां भी इस त्योहार की मूल भावना से मेल नहीं खाती। यह त्योहार प्रकृति और मानव के मध्य आपसी प्रेम का त्योहार है लेकिन हम धार्मिक कर्मकांड के नाम पर लाखों टन लकड़ियां बेमतलब जला देते हैं। इससे अच्छा तो यही होगा कि हम सांकेतिक रूप से होलिका दहन करें। जिसके दौरान व्यर्थ के सामान को जलाएं; वह भी ऐसा सामान जो पर्यावरण को दूषित न करता हो। तभी तो इस त्योहार की मूल भावना को हम आत्मसात कर पाएंगे।

इस प्रकार हम इस त्योहार को इको फ्रेंडली तरीके से मनाकर अपना और अपने पर्यावरण का भला कर पाएंगे। ऐसा करने पर ही हम होली की वास्तविक भावना से परिचित हो सकेंगे। वास्तव में हमारे देश के प्रत्येक त्योहार की मूल भावना समाज में भाईचारे और प्रेम की भावना को बढ़ाना और प्रकृति व मानव के मध्य मधुर सम्बंध बनाए रखना है। होली का अवसर भी हमें प्रकृति से मित्रता स्थापित करने की प्रेरणा देता है। इसलिए इस अवसर पर हम सभी को पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प लेना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***